कक्षा VI

सपनों का देश सिंगापुर

1. सिंगापुर लेखिका के सपनों का देश कैसे बन गया?

उत्तर-: लेखिका सिंगापुर की शान-ओ-शौक़त और चमक-धमक से इतनी प्रभावित हुईं कि वह उनके सपनों का देश बन गया।

2. लेखिका ने सिंगापुर का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर-: लेखिका ने हमें, सिंगापुर के वर्णन के माध्यम से यह देश घुमाया है।

उनका यात्रा- वृत्तान्त काफ़ी रोचक है।

3. सिंगापुर का संक्षिप्त परिचय देना हो तो क्या कहना काफ़ी होगा?

उत्तर-: सिंगापुर के संक्षिप्त परिचय में यही कहना काफ़ी होगा कि यह एक सुंदर द्वीप व समृद्ध देश है।

4. सिंगापुर की आबादी में कितने प्रतिशत भारतीय हैं?

उत्तर-: सिंगापुर की आबादी में करीब आठ प्रतिशत भारतीय हैं।

5. द्वीप किसे कहते हैं?

उत्तर:- भूमि का वह हिस्सा जो सभी तरफ़ से पानी से घिरा हो, द्वीप कहलाता है। जैसे- श्रीलंका।

6. आधुनिक सिंगापुर की स्थापना कैसे हुई?

उत्तर:- आधुनिक सिंगापुर की स्थापना 1819 ई. में हुई, जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के दिल्ली स्थित वाइसरॉय ने अपने एक अधिकारी ,सर स्टेमफोर्ड रेफ़ल्स को व्यापार बढ़ाने हेतु यहाँ भेजा।

7. सिंगापुर के नामकरण के बारे में क्या कहा जाता है?

उत्तर:- ऐसा माना जाता है कि चौदहवीं शताब्दी में ,सुमात्रा द्वीप का एक हिन्दू राजकुमार शिकार करने इस द्वीप पर आया, तो यहाँ शेरों अर्थात सिंहों के समूह को देख, उसने इस स्थान का नाम 'सिंगापुर' रख दिया।

8. मेरलायन स्टेचू क्या है?

उत्तर:- मेरलायन स्टेचू (मूर्ति) सिंगापुर का प्रसिद्ध चिह्न है। यह चिह्नन लगभग सभी जगह दिखाई देता है। इस प्रतिमा का सिर शेर का और नीचे का हिस्सा मछली का है।

9. "जुरोंग बर्ड पार्क" की क्या विशेषता है?

उत्तर:- "जुरोंग बर्ड पार्क" एशिया-प्रशांत क्षेत्र का सबसे बड़ा पक्षी पार्क है। यहाँ अनेक प्रजातियों के पक्षी हैं। इस पार्क में, दक्षिणी ध्रुव का कृत्रिम वातावरण बनाकर पेंग्विन भी रखी गयी हैं।

10. सिंगापुर में बसा "लिटिल इंडिया" कैसा है?

उत्तरः- सिंगापुर में बसा "लिटिल इंडिया" छोटा-सजीव भारत ही प्रतीत होता है। यहाँ कई भारतीय भोजनालय हैं। साड़ी पहने युवतियाँ भी दिखती हैं और यहाँ एक मंदिर भी है।

11. यात्रा या देशाटन से क्या लाभ होते हैं?

उत्तरः- यात्राएँ देश की हों, अथवा विदेश की, वो हमारे मानसिक व आध्यात्मिक विकास के लिए अति-आवश्यक होती हैं।

जब हम सुदूर स्थानों की यात्रा करते हैं तो हम न केवल पहाड़, समुद्र या झरने देख पाते हैं, अपितु वहाँ के तौर-तरीकों, खान-पान और सभ्यता से भी अवगत होते हैं।

यात्राओं के कारण हम अनेक भाषाओं के कम-से-कम कुछ शब्द अवश्य सीख लेते हैं।

भिन्न सभ्यताएँ देख हमारी मानसिकता भी उदारवादी एवं विस्तृत होती है और हम यह भी समझ पाते हैं कि भाषा, रंग, देश-प्रदेश की दीवारों के बाहर, सभी मनुष्य एक जैसे ही होते हैं।